आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received: 10/08/2024; Published: 26/09/2024

गीत

"अनन्त आकाश में ..."

अर्चना सिंह 'अर्चिरश्मि'
अवकाश प्राप्त - शिक्षिका एवं प्रशासक
केंद्रीय विद्यालय संगठन

घनी थी अँधियारी रात जब,

तिमिर छाया हुआ चहुँ ओर था ,

और था अगणित तारा-मण्डलों का,

द्युतिमान झिलमिल प्रकाश ये।1।

और वो प्रथमा के चन्द्र को,

लोप-अलोप सा खे खिलाता रहा,

ले अंक में अपनी तारक -चन्द्र को,

गूढ़ नीलाभ अनन्त आकाश ये ।2।

श्वेत फाहे सा बादलों का एक,

घन-समुच्चय, अल्हड़-सा,कहीं से,

निकल पड़ा अठखेलियां करने,

धीर गम्भीर विस्तृत आकाश में।3।

मंद-मदिर मकरंद पवन के पंखों पर,

इतराता, इठलाता हुआ यों ,

अवरुद्ध कर बैठा अनजाने ही में,

तारक-मण्डल का झिलमिल प्रकाश ये।4।

चलने लगी जब आँख - मिचौनी की,

कोमल सुकुमार मनोरम क्रीड़ा ,

झिलमिल तारक और श्वेत जलधर के,

मध्य विस्तृत अनन्त आकाश में।5।

जलद अपनी जय पर इठलाए,

कभी तारक स्मित हास दिखाए ,

और तिमिर की वेला साक्षी बनी,

जय-विजय की असीम आकाश में।6।

****